धर्मायण

(धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका)

मूल्य : 45 रुपये
अंक 135
आश्विन,
2080 वि. सं.

पितृ-भक्ति विशेषांक

Facsimile copy of the particular article

पितरों का श्राद्ध और तर्पण क्यों है आवश्यक?

अंकपल्लवी

(अंक के माध्यम से शब्दों की सूचना)

डा. ममता मिश्र 'दाश'
संस्थापक सचिव,
प्रो. के.वी. शर्मा रिसर्च इंस्ट्च्यूट, अड्यार, चेन्नई

पाण्डुलिपि की पुष्पिकाओं में लेखनकाल का उल्लेख करने के लिए अथवा ज्यौतिष के ग्रन्थो में शब्द से संख्या का बोध कराने की पद्धतियाँ प्रचलित हैं। यह बोध अर्थानुसार होता है जैसे 0 के लिए आकाश एवं उसके पर्याय, 1 के लिए पृथ्वी, चन्द्र आदि, 2 के लिए नेत्र, बाहु, पक्ष आदि। इसी प्रकार 16 के लिए भूप तथा 32 के लिए दन्त शब्द का प्रयोग प्रचलित है। यहाँ ऐसी पद्धति दी जा रही है, जिसमें संख्या के लेखन से शब्द का बोध होता है। यह जैन पाण्डुलिपियों में मिलती है। इसे 'अंकपल्लवी' कहा गया है। इस अंकपल्लवीकी विशेषता है कि 65।65।512 अंक लिख देने पर 'ममता' शब्द का बोध होता है। इस शोध आलेख में संख्या के लिए शब्दों के प्रयोग के चार नियमों का वर्णन करते हुए इस अंकपल्लवी का विवरण दिया गया है। विशेष रूप से पाण्डुलिपि विज्ञान के जिज्ञासु इससे लाभ उठायेंगे।

अंकों की सूचना देने के लिये शब्दों का प्रयोग भारतीय परम्परा में हजारों सालों से चला आ रहा है।

दक्षिणा गायत्रीसम्पन्ना ब्राह्मणस्य।

बृहतीसम्पन्नाः पशुकामस्य (लाट्यायन श्रौतसूत्र)।

यहाँ 'गायत्री' शब्द का प्रयोग संख्या 24 के लिये तो 'बृहती' शब्द का प्रयोग संख्या 36 के लिये हुआ है। संख्या के लिये शब्द का व्यवहार हर किसी विषय में देखने को मिलता है। जैसे पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि। पर शब्दों की सूचना देने के लिये अंक या संख्या का प्रयोग भारतीय परम्परा कहीं मिलता है क्या? इसी विषय पर इस निबन्ध में आलोचना की जायेगी।

संख्या के लिये शब्दों का प्रयोग चार प्रकार से होते हैं

1. आर्यभटीय नियम
2. कटपयादि नियम
3. भूतसंख्या नियम और
4 अक्षरपल्ली नियम।

आर्यभटीय नियम –

इस नियम की सूचना देने के लिये आर्यभट ने अपनी आर्यभटीय में सूचना दी है –

वर्गाक्षराणि वर्गेऽक्षराणि कात् ङ्मौ यः।
खद्विनवके स्वरा वर्गेऽवर्गे नवान्त्य वर्गे वा॥ (1.2)

वर्गाक्षर जैसे क-म तक अक्षरों की संख्या यथाक्रम 1-25 होती है, परन्तु वर्गीय स्थान में इनका प्रयोग होता है।

अवर्गीय अक्षरों की संख्या य-ह तक 30-100 यथाक्रम होती और अवर्गीय स्थानों में प्रयुक्त होती है। आर्यभट ने 9 स्वरों को यानी मूल स्वरों को लिया है।

इनके हिसाब से सूर्य की परिक्रमा (पूर्वदिशा की ओर) का समय 'ख्युघृ' मतलब 43,20,000 है तो चन्द्र की गति 'चयगियिङुशुछ्लृ' — 5,77,53,336 है।

पर बाद में यह नियम इतना लोकादृत नहीं हो सका। शायद उच्चारण क्लिष्टता एक कारण हो सकता है।

कटपयादि नियम—

कटपयादि नियम को समझाने के लिये महासिद्धान्त में उल्लिखित है —

रूपात् कटपयपूर्वा वर्णा वर्णक्रमेण भवत्यङ्काः।
ञानौ शून्यं, प्रथमार्थे आ छेदे ऐ तृतीयार्थे ॥(1.2)

क, ट, प, य की गणना 1 से होती है, यानि अगर क —1 तो ख—2, ग— 3, घ— 4। वैसे ट— 1 तो ठ— 2। ञ औ न का मूल्य शून्य है।

इस नियम को समझाने के लिये और एक श्लोक शङ्करवर्मकृत सद्रत्नमाला से —

नञावचश्च शून्यानि संख्याः कटपयादयः।
मिश्रे तूपान्त्यहल् संख्या न च चिन्त्यो हलस्वरः ॥

उदाहरण स्वरूप—

गोपीभाग्यमधुव्रात शृङ्गीशोदधिसन्धिग।
खलजीवितखाताव गलहालारसन्धर॥

मूलतया यह श्रीकृष्ण के लिये एक प्रार्थना प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में यह π (Pai) का मूल्य दर्शाता है —

0.31415926535897932384626433832792

महाभारत के **"ततो जयमुदीरयेत्"** यहाँ कटपयादि नियम के अनुसार जय का अर्थ 18 होता है। संगीत ग्रन्थों में इसका प्रयोग भी बहुत मिलता है।

भूतसंख्या नियम —

यह नियम बहुत लोकप्रिय है। बहुत ग्रन्थों में इसका उल्लेख है और अभी भी प्रचलित है। पुष्पिका और उत्तरपुष्पिकाओं में भूत संख्या का प्रयोग बहुल है। 1 संख्या की सूचना के लिये शशी और शशी के समस्त पर्यायवाची शब्द, संख्या 2 के लिये भुज, चक्षु और इनके पर्यायवाची शब्द, 32 के लिये रद शब्द,27 के लिये नक्षत्र शब्द, 49 के लिये तान या पवन आदि शब्दों का बहुल प्रयोग उपलब्ध है।

4 अक्षरपल्ली नियम —

अक्षरों की सहायता से मातृकाओं में पत्रसंख्या देना। इसमें बहुत विविधता दिखायी देती है। कहीं 'न' का मतलब 1 है तो कहीं 'क' का मतलब 1। एक न— न्न— न्य— ष्क नियम भी है जहाँ पत्र में 'न' हो तो 1, न्न —2, न्य— 3, ष्क— 4, झ— 5।

एक और भी नियम है (तमिळ) जहाँ क— 1, उ— 2, न— 3 इत्यादि। ग्रन्थलिपि की मातृकाओं में लगभग तमिळ नियम जैसे पत्रसंख्या दी जाती है।

ये सब संख्या की सूचना देने के लिये शब्दों का प्रयोग।

अंकपल्लवी —

परन्तु भारतीय परम्परा में ऐसी भी व्यवस्था है— शब्दों की सूचना देने के लिये अंक या संख्या का प्रयोग। भारतीय परम्परा में यह अंकपल्लवी के नाम से ज्ञात है। डा. सत्येन्द्र अपने पाण्डुलिपि विज्ञान[1] पुस्तक में अंकपल्लवी के सन्दर्भ में बताया है कि अंकपल्लवी में पहला अ वर्ण का द्योतक, दूसरा उस वर्ग के अक्षर का और तीसरा मात्रा का द्योतक होता है। जैसे 'भाव'

1. डा. सत्येन्द्र, पाण्डुलिपि विज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1978, पृ. 204

"महाभारत के "ततो जयमुदीरयेत्" यहाँ कटपयादि नियम के अनुसार जय का अर्थ 18 होता है। संगीत ग्रन्थों में इसका प्रयोग भी बहुत मिलता है।"

"पर अभी अनुध्यान करने का विषय है कि, क्या ऐसी लिखनशैली सिर्फ यही एक मातृका में मिलती है या ऐसी व्यवस्था और कहीं अपनायी गयी है।"

शब्द को बताने के लिये अंक '642। 74' का प्रयोग। यहाँ 642 का अर्थ है 'भा' तो 74 का अर्थ है 'व'। परन्तु सत्येन्द्र के मत में अकार की सूचना के लिये 1 का प्रयोग होता है। जैसे 651 का अर्थ होता है अक्षर 'म'।

इसी व्यवस्था पर आधारित एक मातृका आचार्य श्री कैलाससागर सूरि ज्ञानमन्दिर, श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गान्धीनगर, गुजरात में संरक्षित है जिसकी संख्या है– 46714। यह हमारा परम सौभाग्य है कि इस केन्द्र में लगभग तीन लाख मातृकाएँ सुरक्षित हैं, और यहाँ पर गवेषकों का स्वागत होता है।

इस अंकपल्लवी प्रतिलिपि का विषय है– पार्श्वजिनस्तवन।[2]

अंकपल्लवी की धारा से उल्लिखित यह प्रति कागज के एक पन्ने में दोनों तरफ लिखा गया है। यहाँअंक को समझने के लिये बता दें कि अ से ह तक पूरी अक्षरमाला 8 वर्ग में विभाजित है। पूरे ग्रन्थ में शून्य '0' का प्रयोग कहीं पर उपलब्ध नहीं है।

वर्ग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
2	क	ख	ग	घ	ङ							
3	च	छ	ज	झ	ञ							
4	ट	ठ	ड	ढ	ण							
5	त	थ	द	ध	न							
6	प	फ	ब	भ	म							
7	य	र	ल	व								
8	श	ष	स	ह								
मात्रा		ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं	ः

2. सं. संजय कुमार झा, अंकपल्लवी लिपिबद्ध पार्श्व जिनस्तवन, श्रुतसागर (मासिक पत्रिका), Vol. 3, issue-12, May, 2017 पृ 15 -24

642।	74।	847।	83।	824।	642।	74।	64।	53।	531।	331।	531।	542।	721।		
भा	व	हे	स	षी(खी)	भा	व	भ	ग	द	ज	द	धा	र		
616	339	847	83	824	616	339	847	612	83	333	457	83	739	334	
पू	जो	है	स	षी(खी)	पू	जो	हे	पा	स	जि	णे	स	लो	जी।	
122	83	837	45	847	83	824	122	83	837	45	722	71	65	732	72
आ	स	से	ण	हे	स	षी (खी)	आ	स	से	ण	रा	य	म	ला	र
742	652	847	83	824	742	652	847	216	828	8411	83	751	334	1	
वा	मा	हे	स	षी(खी)	वा	मा	हे	कू	खे	हं	स	लो	जी।1।		

भाव हे सषी(खी) भाव भगद जद धार
पूजो है सषी(खी) पूजो हे पास जिणेसलो जी।
आससेण हे सषी(खी) आससेण राय मलार
वामा हे सषी(खी) वामा हे कूखे हंसलो जी।1।

लिखन शैली-

इसकी प्रतिलिपि संवत् 1789 में हुई थी जिसकी सूचना 8312।74।51।83।51।72। 89 में दिया गया है। यहाँ89 का मतलब 89 ही है। 8312-सं, 74-व, 51 -त, 83-स, 51-त, 72-र 89। तो प्रचलिताब्द 1732 है। हर एक अक्षर की सूचना के बाद एक दण्ड '।' दिया गया है। कुछ अक्षर को दर्शाने के लिये अंक में मात्रा दी गयी है, जैसे 84 या 74। कभी कभी अंक के साथ साथ अक्षर की सूचना भी उपलब्ध है जैसे 8श इसका मतलब शश नहीं है या शै नहीं है, श ही है। इसमें संयुक्त अक्षर का उपयोग नहीं हुआ है। कहीं-कहीं नाम के पूर्व में श्री शब्द दिया हुआ है, सम्पादक के मत से यह प्रक्षिप्त या अधिक पाठ हो सकता है। कुछ शब्द देवनागरी में लिखे हुए मिलते हैं। सखी के स्थान पर सषी शब्द का व्यवहार हुआ है। संयुक्ताक्षर प्रायतः नहीं है। प्रभु की जगह परभि (भु) आदि।

अन्तिम वाक्य-

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवन संपूरण।

इसके अतिरिक्त प्रतिलेखक ने अपने नाम, स्थलादि का कोई उल्लेख नहीं किया है।

लिखनकार का मन्तव्य –

अंकपल्लवीकृतं स्तवनं। लिखावतं पत्त्रांतरे विलोक्य। विद्वान् स पुमान्। यादृशं तादृशं भवेत् ॥ 1 ॥ शुभं भवतु दिने 2। श्रीभव0 लिखकर प्रति संपूर्ण किया गया है।

यहाँ 'पत्त्रांतरे विलोक्य' से यह स्पष्ट होता है कि यह पूर्व में किसी के द्वारा लिखी गई अंकपल्लवीलिपिबद्ध एक मातृका आधार रूप से रही होगी जिस से प्रतिलिपि की गई है। अंकपल्लवी लिपि की लेखन शैली में यहाँ कई विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

अंक के साथ ह्रस्व इकार, अन्य गाथा में भी अंक के साथ ह्रस्व उकार, कहीं-कहीं नाम के पूर्व में श्री शब्द प्रयुक्त हुआ है। पाठ के मध्य में कहीं कहीं पेखत आदि शब्द देवनागरी में लिखे हुए मिलते हैं। लिपिकार ने प्रत्येक ख की जगह ष का ही उपयोग किया है। जैसे कि सखी में उपयुक्त शब्द 824 षी (स्त्री)। कहीं कहीं अकार के लिये 1 का प्रयोग दिखायी दिया है तो कहीं पर नहीं है मतलब 'क' अक्षर को सूचाने के लिये कहीं क वर्ग की संख्या 2, बस 'क' अक्षर की सूचना के लिये कहीं 2 का प्रयोग तो कहीं 21 का प्रयोग।

इससे पता चलता है कि, यद्यपि इस लिखन शैली के लिये कुछ निर्दिष्ट नियम रहा होगा, संख्या की सूचना देते-देते कभी-कभी प्रतिलिपिकार अक्षर लिख लेता है।

महावीर शब्द को बताने के लिये संख्या 64 ।842 ।744 ।72

पर अभी अनुध्यान करने का विषय है कि, क्या ऐसी लिखनशैली सिर्फ यही एक मातृका में मिलती है या ऐसी व्यवस्था और कहीं अपनायी गयी है। प्रमाण के रूपमें उसी ज्ञानमन्दिर में उपलब्ध एक दो मातृकाओं की पुष्पिका से कुछ पंक्तियाँ –

AKGM 96365 वीतरागस्तोत्र

अन्तिम पंक्तिद्वय –

पं श्रीमाणिक्य चंद्र गणिना लिखि। गंधार बंदिरा

652। 55। 632। 14। पठनार्थम्। सुश्री पं 74। 71। 33। 632। 14 पठनार्थम्। श्रियोस्तु। कल्यणमस्तु।

अत्र मानबाई पठनार्थम् सुश्री पं वायजबाई पठनार्थम्। श्रियोस्तु। कल्यणमस्तु।

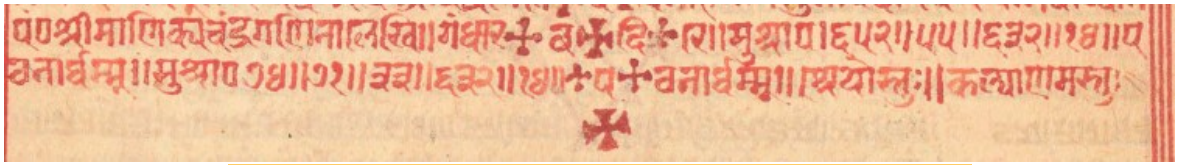

वीतरागस्तोत्र की पुष्पिका

AKGM 0113908 पार्श्वजिनस्तव

अन्तिम पंक्ति

73। 61। 55।65 81। 23 72 – ली पं ने म शा ग र

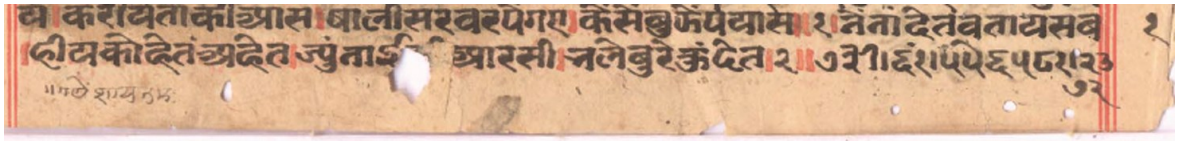

पार्श्वजिनस्तव की पुष्पिका

AKGM 0121573 श्रीपालराजा रास

चतुर्थ पंक्ति

प्रथम पर्याय - 54। 55। 819।65। 23।453। - धनशो(सो)म गणि

द्वितीय पर्याय - 21। 55। 21। 819। 65। 23। 453। - कनक शो(सो)म गणि

पंचम पंक्ति — 11। 65। 72।513।632।14 — अ म र ति बाई

धनशो(सो)म गणि तत् शिष्य पंडित श्री कनक शो(सो)म गणिना लखीतं ओसवंसज्ञातीय ईबा (बाई) श्री अमरति बाई वचनार्थ ---

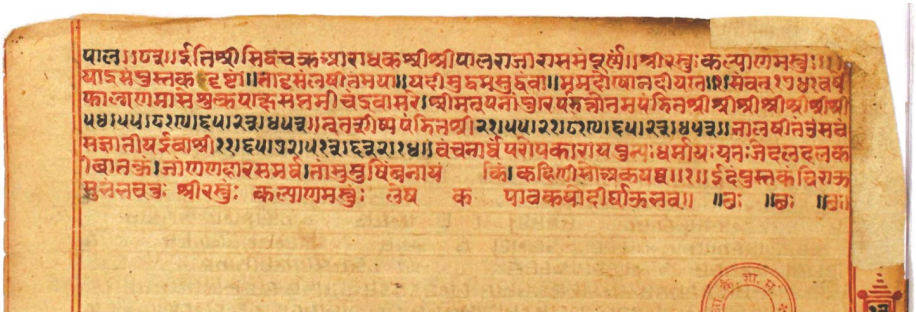

श्रीपालराजा रास की पाण्डुलिपि का अन्तिम पृष्ठ

AKGM 101169 उत्तराध्ययन सूत्र —

अन्तिम पंक्ति – 537। 532। 334। - देदाजी

विद्वानों की अवगति में आया होगा अधिकतर पाण्डुलिपियों के अन्त में कुछ अंकों की सूचना दी गयी है। पर इसका decoding सबसे सम्भव नहीं है। इसमें लिखनकार, लिखन समय, लिखने के उद्देश्य आदि के बारे में सूचना दी गयी होगी। इस पर अध्ययन करना बाकी है।

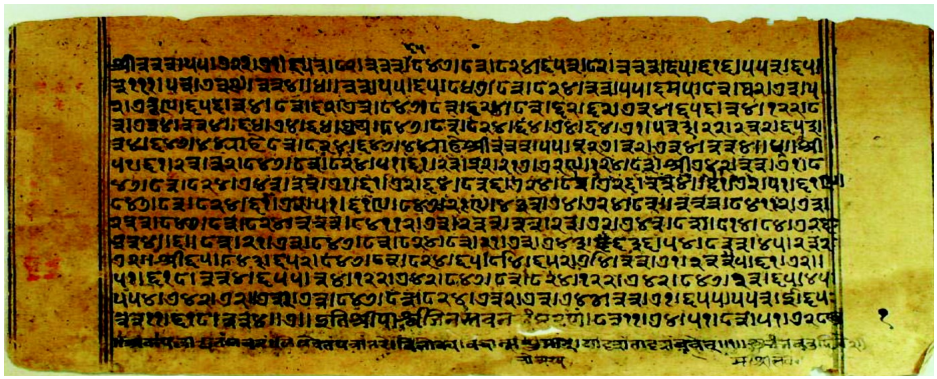

पार्श्वजिनस्तव की पाण्डुलिपि का अन्तिम पृष्ठ

कुछ उत्कलीय मातृकाओं के अन्तिम पत्र में पुष्पिकाओं में संख्या '32' की सूचना दी गयी है। 32 का अर्थ अंक पल्लवी के हिसाब से 'छ' ही है। इसकी पर्यालोचना अपेक्षित है।

***